Lec-25

Dr. Parikshit Kr. Singh
Dept. of LSW
SNSRKS College, Saharsa



# श्रम अर्थशास्त्र की प्रकृति
## (Nature of Labour Economics)

श्रम अर्थशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत दूसरा स्थान इसकी प्रकृति या स्वभाव का आता है। दूसरे शब्दों में, इसकी प्रकृति के अन्तर्गत हम इस बात का अध्ययन करते हैं कि श्रम-अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला या दोनों। यह जानने के लिए श्रम अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला, हमें विज्ञान एवं कला के विषय में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

वास्तव में किसी भी विषय के क्रमबद्ध ज्ञान को विज्ञान कहते हैं जिसमें किसी घटना विशेष के कारण एवं परिणाम के पारस्परिक संबंध का अध्ययन किया जाता है।

**पैनकेयर (Poincare)** ने कहा है, "विज्ञान तथ्यों से इस प्रकार जुड़ा हुआ होता है जिस प्रकार पत्थरों से एक मकान बनता है लेकिन जिस प्रकार पत्थरों के ढेर को मकान नहीं कहा जा सकता ठीक उसी प्रकार तथ्यों के संग्रह मात्र को विज्ञान नहीं कहा जा सकता।"

सामान्यतः विज्ञान भी दो प्रकार का होता है —

(i) यथार्थवादी या वास्तविक या वस्तुपरक विज्ञान (Positive Science)

(ii) आदर्शवादी या मानदीय विज्ञान (Normative Science)

यथार्थवादी विज्ञान में किसी वस्तुस्थिति का वास्तविक अध्ययन किया जाता है। यह विज्ञान यह बताता है कि "यह (वस्तुस्थिति) क्या है।" इस विज्ञान का काम यह बताना नहीं है कि "क्या होना चाहिए।" उदाहरण के लिए यथार्थवादी विज्ञान केवल यह बताता है कि यदि श्रमिक की मजदूरी में वृद्धि

कर दी जाए, तो उसके जीवन-स्तर में सुधार होगा। विज्ञान यह नहीं बताता है कि श्रमिकों को अधिक मजदूरी मिलनी चाहिए या नहीं या कितनी मजदूरी श्रमिकों को मिलनी चाहिए। दूसरी ओर, आदर्शवादी विज्ञान हमारे समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता है अर्थात् यह बताता है कि मजदूरी की दर क्या होनी चाहिए। यह विज्ञान भले-बुरे, उचित-अनुचित में अंतर कर हमारे उद्देश्यों को और संकेत करता है। उदाहरण के लिए अल्प या कम मजदूरी से श्रमिकों का शोषण होता है, अतः यह विज्ञान हमें बताता है कि श्रमिकों को कम मजदूरी नहीं दी जानी चाहिए; क्यों कि इससे उनका शोषण होता है। यह विज्ञान हमें यह भी बताता है कि श्रमिकों के लिए उचित मजदूरी क्या होनी। आचारशास्त्र (Ethics) आदर्शवादी विज्ञान का एक अच्छा उदाहरण है।

श्रम उत्पादन का साधन एवं साध्य दोनों है तथा उसमें मानवीय तत्व विद्यमान रहता है। इस कारण श्रम अर्थशास्त्र में उन तरीकों एवं सिद्धान्तों को भी शामिल किया जाता है जिनसे श्रम एवं समाज के हितों की रक्षा एवं विकास हो सके। श्रम अर्थशास्त्र में कला के तत्व भी निहित होते हैं। **जे॰ एम॰ केन्स (J.N Keynes)** के अनुसार, **"कला एक दिए हुए उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नियमों की एक प्रणाली है।"** इस प्रकार कला का अर्थ होता है किसी काम को उत्तम तरीके से करना। इस प्रकार विज्ञान ज्ञान है एवं कला प्रयोग है। इस प्रकार विज्ञान का संबंध सिद्धान्त से है और कला का सम्बन्ध अलंकार से है। कला के द्वारा ही हमें किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम उपायों की जानकारी प्राप्त होती है। श्रम के क्षेत्र में

मानवीय कारकों की प्रधानता के चलते उचित तरीके का चयन महत्वपूर्ण होता है। श्रम अर्थशास्त्र की प्रकृति या स्वरूप की व्याख्या हम इसप्रकार कर सकते हैं —

## श्रम अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में (Labour Economics as a Science)–

विज्ञान की परिभाषा के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि श्रम अर्थशास्त्र विज्ञान है, क्योंकि इसमें श्रम बाजार, श्रम शक्ति, श्रम समस्याओं आदि से संबंधित कई स्थितियों एवं क्रियाओं का क्रमबद्ध ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है। इसमें श्रम समस्याओं से संबंधित विभिन्न नियमों का निरूपण किया जाता है एवं घटनाओं एवं तथ्यों के कारण एवं परिणाम का भी अध्ययन किया जाता है। यही नहीं, बल्कि श्रम अर्थशास्त्र यथार्थवादी एवं आदर्शवादी विज्ञान दोनों हैं।

## श्रम अर्थशास्त्र यथार्थवादी विज्ञान के रूप में (Labour Economics as a Positive Science)–

श्रम अर्थशास्त्र यथार्थवादी विज्ञान इसलिए है कि यह हमें अर्थ-व्यवस्था की स्थिति की जानकारी देता है एवं श्रम समंकों एवं श्रम समस्याओं के बीच कारण एवं परिणाम का सम्बन्ध स्थापित करता है। इस प्रकार, श्रम अर्थशास्त्र यथार्थवादी विज्ञान के रूप में निरपेक्ष होकर कारण एवं परिणाम के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है तथा उसके आधार पर नियमों और सिद्धान्तों का निर्माण करता है। उदाहरण के लिए श्रम अर्थशास्त्र में श्रमशक्ति की बनावट, कार्यशील जनसंख्या, मजदूरी दरों, रहन-सहन के स्तरों, बेरोजगारी की मात्रा, औद्योगिक कार्यवाहियों के चलते नष्ट हुए मानव दिनों की संख्या, श्रम की माँग एवं पूर्ति

से संबंधित आँकड़े और तथ्यों को एकत्र करना आवश्यक होता है। इन तथ्यों के आधार पर श्रम से संबंधित जानकारी को जानने में हमें काफी सहायता मिलती है। श्रम अर्थशास्त्र के क्षेत्र में कारण एवं परिणाम से संबंधित नियमों में श्रम बाजार में श्रम की पूर्ति कम होने पर मजदूरी दरों में वृद्धि होती है, जनसंख्या में वृद्धि से बेरोजगारी की संभावना बढ़ती है या श्रम शक्ति में अधिक संख्या में लोगों के प्रवेश करने से रोजगार में वृद्धि की संभावना बढ़ती है या श्रम शक्ति में अधिक संख्या में लोगों के प्रवेश करने से रोजगार में वृद्धि की संभावना बढ़ती है, श्रमिकों की मजदूरी में वृद्धि से उनके जीवनस्तर में सुधार होता है, औद्योगिक शांति से उत्पादन का स्तर ऊँचा बना रहता है तथा श्रम लागत में वृद्धि से उत्पादन लागत में वृद्धि हो जाती है आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्रम से संबंधित विषयों की सही जानकारी से वैकल्पिक सामाजिक नीतियों के मूल्यांकन के लिए एक वास्तविक आधार मिल जाता है। इस तरह, श्रम अर्थशास्त्र से मानवीय संसाधन को विभिन्न उपयोगों में लगाने के लिए एक वास्तविक आधार मिल जाता है। यथार्थ विज्ञान के रूप में श्रम अर्थशास्त्र से प्रविधियों तथा प्रणालियों के विकास में प्रचुर सहायता मिलती है। श्रम अर्थशास्त्र के यथार्थवादी विज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए **सीनियर** ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि "अर्थशास्त्री के निष्कर्ष उसे परामर्श का एक शब्दांश देने की भी अनुमति नहीं देते। यह विशेषाधिकार राजनीतिज्ञ को प्राप्त है। उसे न तो सिफारिश करनी है और न बहकाना है वरन् सामान्य नियमों को बताना है।"

प्रो. रॉबिन्स (Robbins) का कहना है, "श्रम अर्थशास्त्र एक विशुद्ध यथार्थवादी विज्ञान है, अतः नीतिशास्त्र से इसका कोई संबंध नहीं है।"

Scanned with CamScanner

अतः, उनके अनुसार, "श्रम अर्थशास्त्री का काम आलोचना एवं अनुसंधान करना है न कि समर्थन या निन्दा करना।"

**श्रम अर्थशास्त्र आदर्शवादी विज्ञान के रूप में (Labour Economics as a Normative Science)-**

यथार्थ वादी विज्ञान होने के साथ-साथ श्रम अर्थशास्त्र एक आदर्शवादी विज्ञान भी है। यह हमारे सामने आदर्शों को प्रस्तुत कर मानव कल्याण में वृद्धि करने के उपायों को बताता है। उदाहरण के लिए यह बताता है कि समाज में व्याप्त आर्थिक एवं सामाजिक बुराइयों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। समाज में आय की विषमता को कैसे दूर किया जा सकता है। श्रमिकों की दयनीय स्थिति में सुधार के क्या उपाय हैं। उत्पादन-वृद्धि के क्या तरीके हैं तथा बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए या रोजगार के अवसरों में वृद्धि के लिए क्या उपाय किये जा सकते हैं।

श्रम उत्पादन का साधन एवं साध्य दोनों होता है, क्यों कि श्रम से ही उत्पादन, वितरण, विनिमय आदि आर्थिक क्रियाएँ संचालित होती हैं। वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन श्रम या मनुष्य के उपभोग (consumption) के लिए किया जाता है। इस तरह, श्रम अर्थशास्त्र में केवल श्रम से संबंधित तथ्यों को एकत्र ही नहीं किया जाता और न कारण एवं परिणाम के सम्बन्ध को ही दिखाने का प्रयास किया जाता है बल्कि इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि श्रम से संबंधित विषयों के ज्ञान का प्रयोग इस प्रकार किया जाय जिससे सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति, श्रम समस्याओं के समाधान तथा श्रमिकों एवं जन समुदाय का अधिकतम कल्याण हो।

मार्शल के अनुसार, "यदि श्रम अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण में वृद्धि के कारणों का अध्ययन नहीं करे, तो यह अनाड़ एवं निष्फल होगा।"

Scanned with CamScanner

इस प्रकार, इनका कहना है कि श्रम अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है और किसी भी सामाजिक विज्ञान को उद्देश्यहीन नहीं रखा जा सकता। व्यवहार में इन्हीं सामाजिक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए श्रम के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है तथा उनके आधार पर निकले विभिन्न विकल्पों की सापेक्षिक उपयोगिता निर्धारित की जाती है।

फ्रेजर (Fraser) ने इस संबंध में कहा है कि **"एक अर्थशास्त्री जो केवल एक अर्थशास्त्री है वह एक सुन्दर, लेकिन बेबस मछली के समान है।"** श्रम अर्थशास्त्री केवल मजदूरी दरों को निर्धारित करनेवाले तत्वों का ही अध्ययन नहीं करता बल्कि वह यह भी बताता है कि उचित मजदूरी दर क्या होनी चाहिए। श्रम अर्थशास्त्री केवल यह नहीं बताता कि उत्पादकता (Productivity) किन-किन तत्वों से प्रभावित होती है बल्कि यह भी बताता है कि उत्पादकता में वृद्धि के लिए कौन-कौन से कदम उठाये जा सकते हैं। वह बेरोजगारी के कारणों का पता लगाने के साथ-साथ बेरोजगारी की समस्या सुलझाने के लिए सुझाव भी देता है। वह यह भी बताता है कि श्रमिकों के जीवन स्तर में किस प्रकार सुधार लाया जा सकता है।

प्रो० पीगू (A.C. Pigou) ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि **"श्रम अर्थशास्त्र का महत्व मुख्यतः न तो मानसिक व्यायाम के रूप में है और न केवल सत्य के लिए सत्य की खोज के रूप में है वरन् आचार शास्त्र की नौकरानी एवं व्यवहार के दास के रूप में है।"**

पीगू ने अर्थशास्त्र की तरह श्रम अर्थशास्त्र को ज्ञानदायक तथा फलदायक दोनों माना है। इनके अनुसार, "प्रत्येक विज्ञान के दो पक्ष होते हैं — ज्ञानदायक और फलदायक एवं किसी विज्ञान में ज्ञानदायक पक्ष प्रबल होता है तो किसी में फलदायक पक्ष प्रबल होता है। लेकिन श्रम अर्थशास्त्र में फलदायक पक्ष ही अधिक प्रबल है।"

Scanned with CamScanner

## श्रम अर्थशास्त्र कला के रूप में (Labour Economics as an Art)–

श्रम समस्याओं के समाधान के लिए श्रम अर्थशास्त्र में व्यावहारिक नीति की निरंतर आवश्यकता है। वास्तव में, श्रम अर्थशास्त्र केवल विज्ञान ही नहीं कला भी है। उदाहरण के लिए श्रम अर्थशास्त्र केवल यह नहीं बताता कि उद्योग-धन्धें क्यों पिछड़े हुए हैं बल्कि एक कलाकार की तरह उन उपायों को भी बताता है जिनसे उद्योग-धन्धों का विकास या प्रगति हो सकती है। इसी प्रकार, श्रम अर्थशास्त्र केवल श्रमिकों के निम्न जीवन-स्तर के कारणों का ही अध्ययन नहीं करता वरन् श्रमिकों को गरीबी से छुटकारा दिलाने के लिए, जीवन-स्तर ऊँचा करने के लिए उपाय भी बताता है।

श्रम अर्थशास्त्र में श्रम से संबंधित विभिन्न पहलुओं का तथ्यों के आधार पर अध्ययन तो किया जाता है, लेकिन साथ ही उसमें इस बात पर भी प्रकाश डाला जाता है कि श्रम समस्याओं के समाधान में उपलब्ध कई विकल्पों में कौन-सा विकल्प अधिक उचित है। श्रम अर्थशास्त्री बेरोजगारी दूर करने, श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार करने, औद्योगिक शांति बनाए रखने, श्रम उत्पादकता में वृद्धि करने आदि के लिए अपना उचित सुझाव देता रहा है। यही कारण है कि आज श्रम अर्थशास्त्र में श्रम-संबन्धी नीतियों एवं कार्यक्रमों की उपयोगिता के अध्ययन पर समुचित ध्यान दिया जाता है एवं वर्तमान समय में श्रम अर्थशास्त्र को विज्ञान के साथ-साथ कला भी माना जाता है। यही कारण है कि आज सैद्धान्तिक श्रम अर्थशास्त्र के साथ-साथ व्यावहारिक श्रम अर्थशास्त्र का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

## श्रम अर्थशास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों के रूप में (Labour Economics as a Science and an Art both)–

इस प्रकार उक्त विवेचन के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि श्रम अर्थशास्त्र विज्ञान एवं कला दोनों है, क्यों कि इसमें श्रम से संबंधित विभिन्न पहलुओं के क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए यह विज्ञान है। दूसरी ओर श्रम अर्थशास्त्र में जनकल्याण एवं

Scanned with CamScanner

विशेषकर श्रमिकों के कल्याण के लिए विभिन्न तरीकों की खोज की जाती है और उन्हें उपयोग में लाने के सुझाव दिये जाते हैं जिसके कारण एक कला भी कहा है।

डेल योडर (Dale Yoder) तथा एच॰ जी॰ हेनेमन (H·G·Heneman) के अनुसार "श्रम अर्थशास्त्र द्वारा मानवीय आचरण की उन प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनसे मानवीय संसाधनों के अन्वेषण, विकास, वितरण तथा संयोजन के कार्य सम्पन्न होते हैं।" इस प्रकार यदि ~~श्रम~~ श्रम अर्थशास्त्र की वास्तविक प्रकृति पर ध्यान दिया जाय, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह केवल यथार्थवादी विज्ञान ही नहीं वरन् आदर्शवादी विज्ञान भी है। श्रम अर्थशास्त्र का अध्ययन केवल ज्ञान-प्राप्ति एवं आर्थिक तथ्यों के विश्लेषण के लिए ही नहीं किया जाता बल्कि इसका एक निश्चित उद्देश्य या आदर्श होता है और वह उद्देश्य है मानव कल्याण, विशेषकर श्रमिक कल्याण में वृद्धि करना। प्रो॰ पीगू (Pigou) ने ठीक ही कहा है, "श्रम अर्थशास्त्र के विज्ञान में यह पक्ष की प्रतीक्षा है और न प्रकाश की जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है।" किन्तु, श्रम अर्थशास्त्र केवल तथ्यों का अध्ययन एवं आदर्शों का निर्माण ही नहीं करता वरन् उन आदर्शों की प्राप्ति के लिए व्यवहारिक उपाय भी प्रस्तुत करता है। श्रम अर्थशास्त्र की वास्तविक प्रकृति की विवेचना करते हुए हम कह सकते हैं, "श्रम अर्थशास्त्र एक यथार्थवादी विज्ञान के रूप में आर्थिक तथ्यों का अध्ययन करता है, एक आदर्शवादी विज्ञान के रूप में तथ्य किस प्रकार के होने चाहिए का अध्ययन करता है तथा एक कला के रूप में कुछ विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति के तरीके एवं साधन का पता लगाता है।"

अतः, निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि श्रम अर्थशास्त्र एक विज्ञान है। यह यथार्थवादी या वास्तविक एवं आदर्शवादी दोनों विज्ञान है। साथ-ही-साथ श्रम अर्थशास्त्र कला भी है। अतः श्रम अर्थशास्त्र 'विज्ञान' (Science) होने के साथ-साथ 'कला' (Art) भी है। इसमें श्रम-सिद्धान्तों और श्रम-समस्याओं का ही विवेचन नहीं किया जाता, अपितु श्रम-समस्याओं के उपचार द्वारा आर्थिक विकास के उपाय भी बतलाए जाते हैं।

---

Scanned with CamScanner